ओम शांति,

हम सभी ब्राह्मण आत्माएं इस संसार में सब से अधिक भाग्यवान है, क्यूँ यह तो हम सभी जानते है। स्वयं भगवान् कि पालना हमें मिल रही है वोह जैसे इस सृस्टि को बदलने के लिए इस धरा में अवतरित हुए उन्होंने हम सभी में योग्यताएं भरनी प्रारंभ करली इससे हमारे वाइब्रेशन्स ना केवल वातावरण को मिल सके बल्कि मनुष्य आत्माओ को भी श्रेस्ठ बनने प्रेरणा दें और यह प्रकृति भी पावन हो जाएँ। क्यूँ कि संसार को बदलने के लिए प्रकृति और मनुष्य आत्मा दोनों को बदलना परम आवश्यक है इसके लिए हमें अति आवश्यकता है अपने अंदर स्पिरिचुअल पॉवर भरने कि, अलोकिक शक्तियां भरने कि यह शक्तियां ही हमसे चारो और वाइब्रेट होती, चारो और प्रवाहित होगी और इससे जग का कल्याण होगा। इसलिए यह कहा गया है श्रीमद भगवद गीता भी कहती है कि **एक योगी इस जीवन के लिए सब से ज्यादा कल्याणकारी है, उसकी इस धरा पर उपस्थिति भी जग का कल्याण करती है, आसपास के वातावरण को चार्ज कर देती है।**

तो बाबा हम सभी को रोज प्रेरणा दे रहे है कि बच्चे तुम्हारा जीवन योगी जीवन है, तुम योगी आत्माएं हो, तुम इस धरा पर अवतार हो, तुम संसार के लिए वरदान हो इसलिए अपनी शक्तियों को पहचानो, अपने सत्य स्वरुप को पहचानो तुम साधारणता में ना रहो, तुम्हारी स्थिति संसार कि स्थिति बन जाती है, तुम्हारी सम्पूर्ण स्थिति समय को समाप्त करती है इसीलिए अपने श्रेस्ठ स्वमान में स्थित हो जाओ। हम सब ईश्वरीय महावाक्य में रोज सुन रहे है **जहाँ स्वमान होगा वहाँ देह अभिमान समाप्त हो जाएगा। जैसे प्रकाश अन्धकार को समाप्त कर देता है वैसे ही स्वमान देह अभिमान को समाप्त कर देता है** और यह देह अभिमान ही तो सभी पापो का मूल है, इसी से तो समस्त विकारो कि उत्पति होती है, येही मनुष्य को व्यर्थ संकल्पो कि दलदल में डालता है और येही मनुष्यको बुरे संस्कारो को जन्म देता है, बढ़ावा देता है। सूच पूछे तो आज संसार कि सारी समस्यायों का बिज यह देह अभिमान ही है और हम यह समज सकते है कि स्वमान में स्थित होने से हम सभी समस्यायों से निदान पा सकते है, हम विघ्न मुक्त जीवन का परम आनंद ले सकते है। इसीलिए बाबा बार बार हम सभी को विशेष रूप से महत्व समझा रहे है, जोर दे रहे है बच्चे स्वयं को स्वमान में स्थित करो, स्वमान कि अथॉरिटी बनो, स्वमान के अनुभव बहोत सुंदर है इससे तुम्हे वरदान प्राप्त होंगे।

वास्तव में हम अपने जीवन के लिए स्वमान को वरदान बना सकते है और वरदानी जीवन बहोत सहज जीवन होता है, बहोत सफल जीवन होता है जो हमें सहज भाव से कर्म योगी बना देता है, कर्म श्रेस्ठ करने कि प्रेरणा दे देता है। तो आओ हम सभी स्वमान के महत्व को समजते हुए अपने को श्रेस्ठ स्वमान में स्थित करें।

स्वमान के अनेक फायदे है बाबा ने भिन्न भिन्न महावाक्यों में भिन्न भिन्न समय पर अलग अलग शब्दो में इसका महत्व हम सब को बताया है। याद होगा आपको याद करलें - जो बच्चे स्वमान में स्थित रहते है सम्मान उनके पीछे परछाई कि तरह आता है। देखिये हम सब जानते है समाज में परिवार में कोई कहीं भी संगठन में रहता हो मनुष्य को सम्मान तो चाहिए ही, सम्मान के बिना तो जीवन भी सुख बन जाता है, सम्मान के बिना मनुष्य के अंदर हिन् भावना होने लगती है। **अगर हम अपने को श्रेस्ठ स्वमान में स्थित रखेंगे तो हमें सम्मान माँगना ही नहीं पड़ेगा बल्कि सम्मान सहज ही प्राप्त होगा।** चाहे आप घर में बुजुर्ग है बच्चे और आपके पोत्रे आपको सम्मान नहीं देते, जो आपको ऊँची नजर से नहीं देखते आपको महसूस होगा स्वमान में रहने से यह सब आपको बहोत प्यार करने लगे है, सब आपके महत्व को समजने लगे है, सब आपको दिल से सम्मान देने लगे है, आप इसके अधिकारी है। आपके साथ काम करने वाली टीम आपकी बात नहीं मानती है, आपको सम्मान नहीं देती है यदि आप स्वमान का अभ्यास करेंगे तो आपकी सारी टीम आपके सारे कार्य करता आपके साथ हो जायेंगे। उनके मन में, उनके दिल में आपके लिए सच्चा

स्वमान उत्पन हो जाएगा। जिस भी फील्ड में आप है आप एक अध्यापक है, आप एक प्रोफ़ेसर है आप यह चाहते है कि आपके विध्यार्थी का सम्पूर्ण स्वमान आपको प्राप्त हो, होना भी चाहिए इससे दोनों का फायदा है अगर विद्यार्थियों के मन अपने शिक्षक के प्रति गहन सम्मान हो तो उनकी ग्रहण शक्ति भी बढ़ जाती है और शिक्षक जो सम्मान को महसूस करेगा तो उसके पास जितनी भी विध्या है वोह अपनी सभी विध्या को प्रदान करेगा। उसको भी फायदा, उसके क्लास का रिजल्ट अच्छा होगा, उसका नाम होगा और विध्यार्थी बहोत अच्छे होंगे, उनकी भावनाएं उनकी एकाग्रता में वृद्धि करेगी। जिस भी फील्ड में आप है आप एक व्यापारी है उसमें आपको बहोत सहज सफलता प्राप्त होगी, आप एक डॉक्टर है आपके प्रोफेसन में आपको सहज आगे बढ़ने का अनुभव होगा, आपकी दृस्टि में वोह प्रभाव आजायेगा कि पेशेंट्स आपसे बहोत प्रभावित होंगे, आपके लिए उनके मन में श्रेस्ठ भावनाएं हो जायेगी कि यह डॉक्टर जो कुछ हमें दे देगा चाहे वोह राख ही हमें क्यूँ ना दे दें हम उससे ठीक हो जायेंगे।

तो स्वमान सम्मान बढ़ाता है, दूसरे के लिए हमारे मन में श्रेस्ठ भावनाएं उत्पन करता है यह एक बहोत बड़ा फायदा है। दूसरा बड़ा फायदा जैसे कि बाबा रोज केह रहे है और हम उसे अच्छा कर रहे है - अभिमान समाप्त होगा, देह अभिमान भी, गुणो का अभिमान भी, सम्पति, बल, बुद्धि, योग्यताएं जिस चीज का भी हमें अभिमान हो। मनुष्य को अभिमान रहता है वोह समाप्त होने लगेगा और हम सब जानते है, जान सकते है में यह कहूंगा सभी को जानना ही चाहिए - अनेक समस्यायों का मूल अभिमान है, इस अहम ने मनुष्य को बहोत सताया है, यह सचमुच मनुष्य के महान शत्रु है। अहम से ही घर घर में महाभारत होता है, अहम से टकराव हो रहा है, अहम मनुष्य को दूसरे के प्रति अच्छी भावनाएं नहीं करने देता वोह येही सोचता है में ही राईट हूँ, में ही बुद्धिमान हूँ, बाकि सब को कुछ नहीं आता। तो उस अभिमान, अहम जो सूक्ष्म मेपन आजाता है मनुष्य के अंदर, यह मेपन स्वतः ही समाप्त होने लगेगा यदि हम स्वयं को अच्छे अच्छे स्वमान में स्थित करते चलेंगे।

हम यह चर्चा थोडा बाद में करेंगे कि स्वमान में स्थित करना क्या होता है, पहले हम इसके महत्व पर ध्यान दे रहे है ताकि हमें समज में आजायें कि **जीवन कि सभी समस्याओं का समाधान स्वमान में ही है, चाहे आपका मन भटकता है, चाहे आपका योग नहीं लगता है, चाहे आपको प्यूरिटी कठिन लगती है, चाहे आपको क्रोध को जितना बहोत कठिन प्रतीत हो रहा है सब सहज हो जाएगा।** क्यूंकि सहज जीवन जीने का तरीका है आधार है स्वयं को श्रेस्ठ स्वमान में स्थित करना।

तीसरी एक विशेष बात पर ध्यान दें ईश्वरीय महावाक्य है अगर तुम अपनी पोजीसन में रहो तो कोई भी तुम्हारा ओपोजिशन नहीं करेगा। बाबा ने ब्रह्मा बाबा का भी उदहारण दिया है हमेशा, कि देखिये ब्रह्मा बाबा को बहोत ओपोस किया गया वोह जैसे ही ईश्वरीय मार्ग पर चलें और भगवान् के माध्यम बने और उन्होंने स्वयं में जो प्यूरिटी अपनायी और सब को भी पवित्र बनाना प्रारम्भ किया। में यह नहीं कहूंगा केवल सन्देश दिया सभी उनके पास पवित्रता कि सरिता में स्नान करके बिलकुल पावन बनने लगे। समाज में जो कि रूढ़िवादी है, जो अंधविश्वासी है, जो पुराणी मान्यताओं को छोड़ना नहीं चाहता चाहे वोह कितनी भी गलत क्यूँ ना हो, चाहे उससे उनका कितना भी नुक्सान क्यूँ ना हो रहा हो उन्होंने बाबा का विरोध प्रारम्भ किया कि यह बाबा कौनसी नयी बात लेकर आया है लेकिन क्यूंकि बाबा श्रेस्ठ पोजीसन में स्थित रहते थे, पोजीसन का अर्थ है स्वमान शिवबाबा ने उनको बहोत ईश्वरीय नशा दे दिया था उसमें वोह स्थित थे इसलिए ना तो उनकी मनोस्थिति पर अपोजिशन का प्रभाव पड़ा, ना अपोजिशन उनके कदमो को रोक पाया, ना अपोजिशन करने वालों का पोजीसन ही लम्बा काल चल पाया। क्यूंकि **हमारी श्रेस्ठ पोजीसन कि स्थिति हमारी श्रेस्ठ स्वमान के वाइब्रेशन्स दुसरो को जो उनमें यह गलत फीलिंग्स है अपोजिशन करने कि, विरदोह करने कि भावनाएं उसको निर्बल करते है।**

तो हम सब भी ध्यान दें आपका समाज में, परिवार में विरोध होता हो, होता है क्यूंकि हम एक ऐसे पथ के अनुगामी है जो सत्य का पथ है, जो प्रकाश का पथ है, जो परमात्म पथ है और लोग कलयुग के अन्धकार में जीवन व्यतीत कर रहे है। वोह यदि किसी को प्रकाश में जाते देखते है तो उन्हें लगता नहीं कि कोई प्रकाश में जा रहा है उनको जाने दिया जाएँ। आजतक भी जो श्रेस्ठ भक्त हुए, जो अच्छे योगी तपस्वी हुए उन्हें समाज का विरोध करना पड़ा बहोत अच्छे अच्छे लोग हम देखते है जिनकी आज लोग पूजा कर रहे है, जिनके लोग मंदिर बना रहे है, जिनके पत्थर कि मूर्तियों के सर पर सोने के ताज रख रहे है, जिनके पत्थर कि मूर्तियों के गले में बहोत बहोत ज्यादा सोने कि मालाएं पहना रहे है, जब वोह महापुरुष इस धरा पर थे तब लोग उन्हें खाना भी नहीं देते थे, लोग उन पर पत्थर फेंकते थे गालियों से ही उनका स्वागत करते थे। आज उनको लोग समज पाएं और उसका कारण भी येही है कि वोह इस विरोध से विचलित नहीं हुए, उन्होंने विरोध को विरोध नहीं माना, उन्होंने विरोध को आगे बढ़ने का साधन बना लिया और वोह जानते थे कि समाज कि जो निति और विधि है कि हर अच्छी बात का विरोध करना, पापियों को सहयोग देने वालें हजारो मिल जायेंगे, जूठ के साथी करोडो हो सकते है लेकिन सत्य के साथी ढूंढने पर ही मिलते है।

इसलिए जितना हम श्रेस्ठ स्वमान में स्थित होंगे अपोजिशन स्वतः ही समाप्त होता चलेगा। और आगे चलें **एक बहोत बड़ी प्राप्ति स्वमान से हमें होगी, स्वमान से हमारे बोल में प्रभाव आजाता है।** आप एक माँ है आपके बच्चे आपकी बात नहीं मानते है, विकराल समस्या आजकल के समय कि लेकिन यदि आप स्वमान में स्थित रहेंगे और बच्चो को आत्मिक दृस्टि से देकर कुछ भी कहेंगी बच्चे करेंगे ही। आप एक शिक्षक है आपके बच्चे आपके सम्पूर्ण आज्ञाकारी बन जायेंगे, आप व्यापारी है आपके बोल में बहोत प्रभाव आजायेगा, जिस भी फील्ड में है आप सब जानते है कि बोल के प्रभाव का हर फील्ड में बड़ा महत्व है। आप एडवोकेट है आपके बोल दुसरो को जल्दी ही कन्वीन्स कर सकते है, आपके केस सफल हो सकते है। स्वमान हर व्यक्ति के लिए इतना आवश्यक है कि बोल में जादुई प्रभाव ला देता है, सब अवश्य चाहेंगे कि हमारे बोल में प्रभाव आयें, जब हम दुसरो को ईश्वरीय ज्ञान भी दें तो हमारा एक एक बोल उनके दिल में छपता चला जाएँ, वोह हर बात को स्वीकार करने लगे क्यूंकि हम भगवान् कि बात सुना रहे है, हम भगवान् के महावाक्य उन्हें याद दिला रहे है, हम उनकी सोयी हुई शक्तियों को जगा रहे है, हम देवत्व कि और ले जाना चाहते है, हम उन्हें खोया हुआ राज्य भाग्य दिलाना चाहते है, हम उन्हें भगवान् से मिलाना चाहते है। तो भी लोग हमारे बोल पे विश्वास नहीं करते सभी अच्छी तरह समज लें **यदि हम स्वमान में स्थित रहेंगे तो सुनने वालें हम पर सम्पूर्ण विश्वास करेंगे ही।** तो कितना महत्व हो गया।

और आगे हम चलें, आजकल बहोत विध्यार्थियों कि यह समस्या सामने आ रही है कि उनका पढाई में मन नहीं लगता, उनकी एकाग्रता नहीं होती, उनकी मेमोरी पॉवर दिन ब दिन वीक होती जा रही है या जब एग्जाम का समय आता है एक्सामफिएर उनको बेचैन करता है जो उन्होंने तैयारी कि है याद किया उसको भुला देता है। यदि विध्यार्थियों को स्वमान सिखा दिया जाएँ तब तो उनके अंदर से डर समाप्त हो जाएँ, परीक्षा का डर नहीं रहेगा। उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़ जाएगा **क्यूंकि स्वमान से आत्मविश्वास में अतिशय वृद्धि हो जाती है**, बहोत अच्छा होगा, उनकी मेमोरी पॉवर बढ़ेगी, उनकी एकाग्रता बढ़ेगी। तो क्या होता है कि स्वमान के अभ्यास से आत्मा को आत्मिक सुकून मिलने लगता है, स्वमान आत्मअभिमान कि सर्व श्रेस्ठ स्थिति है, हम सब ईश्वरीय महावाक्यों में सुनते रहते है कि जैसे तुम्हारे जीवन में देह अभिमान नेचुरल हो गया है, तुम्हे सोचना नहीं पड़ता कि हम देह अभिमान में कैसे आयें? वैसे ही देहि अभिमानी स्थिति को भी नेचुरल बनाओ, उसको अपनी नेचर बना दों, अपनी आदत बनालो। सहज भाव से जैसे ही आपके पास रहने लगे आपकी स्थिति बन जाएँ, **सतयुग में जब आप देव स्वरुप में है तब आप नेचुरल देहि अभिमानी है बिना किसी अभ्यास के है और इसका तरीका है स्वमान।** क्यूंकि स्वमान से देह अभिमान

नष्ट होता जाता है तो देहि अभिमानी स्थिति स्वतः ही बन जायेगी और उससे विध्यार्थियों कि मेमोरी पॉवर बढ़ेगी, उनकी एकाग्रता बढ़ेगी, उनकी बुद्धि क्षमता बढ़ेगी।

बौद्धिक क्षमता। क्यूँ नहीं बढ़ती मनुष्य कि? लोगो के यह जान लेना चाहिए, बुद्धिमानो को यह जान लेना चाहिए कि बुद्धि में बहोत गंदकी है, बुद्धि में क्यूंकि अपवित्रता है, बुद्धि में क्यूंकि घृणा, ईर्षा, द्वेष और व्यर्थ चीजे बहोत भरी है इसलिए बौद्धिक क्षमता मनुष्य कि बहोत कम होती जाती है। यदि विध्यार्थियों कि अपनी बौद्धिक क्षमता बढ़ानी है तो उन्हें पवित्रता पर बहोत बहोत ध्यान देना चाहिए। आजकल क्यूंकि हमारे समाज में ब्रह्मचर्य का महत्व प्रायः लोप होता जा रहा है, तो विध्यार्थी भी उनके महत्व पर ध्यान नहीं देते, उसको जानते भी नहीं, हमारी मेडिकल साइंस और मनोविज्ञान भी ब्रह्मचर्य के महत्व को नहीं समजता। में ओपेनली केह सकता हूँ कि यह इनका अन्धकार है, अज्ञान है उनके पास कम्पलीट नॉलेज नहीं है।

पवित्रता का बल। मनुष्य के बुद्धि का विकास करता है, और पवित्रता का बल बढ़ेगा स्वमान से, कलयुग के इस तमोप्रधान वातावरण में स्वमान कि स्थिति पवित्रता कि स्थिति को बढ़ाएंगी, परम सुख का अनुभव कराएगी और यह परम सुख कर्मेन्द्रियों के सुखो को समाप्त करने वाला हो जाएगा, हम कर्मेन्द्रियजित बन जायेंगे यह एक सच्चे योगी कि पहचान होगी।

और आगे हम चलें। योग अभ्यास जो हमारा प्रमुख विषय है राजयोग मैडिटेशन स्वमान के अभ्यास के द्वारा उसमें बहोत ज्यादा सफलता होगी। में आप सभी को स्वमान के बारें में बाबा के द्वारा कही हुई कुछ बातें याद दिलाना चाहता हूँ बाबा ने कहा **जो बच्चे स्वमान कि सीट पर सेट रहते है उनका जिम्मेदार बाप है यानि स्वयं भगवान् है और जो अपसेट रहते है उनके जिम्मेदार वोह स्वयं है।** देखिये कितनी सुंदर बात है, कि यदि हम स्वमान में स्थित रहेंगे तो हमारी जिम्मेदारी भी भगवान् के हाथों में रहेगी हमें निश्चिंत हो जाना चाहिए, हम बेगमपुर के बादशाह बन जायेंगे, हम बेफिक्र हो जायेंगे, तनाव रहित हो जायेंगे। हम विश्वास करें हम स्वमान में रहेंगे तो कहीं भी हमें परेशानी नहीं रहेगी, हमारा अहित होगा ही नहीं।

बाबा स्वयं सर्व शक्तिवान हमारी जिम्मेदारी संभालता रहेगा हमें उसकी सूक्ष्म रूप से गाइडेन्स मिलती रहेगी, वोह छत्र छाया बनकर हमारे साथ रहेगा। दूसरा सुंदर महावाक्य बहोत सुंदर है इसकी सुंदरता को आप महसूस करें - जो बच्चे स्वमान में स्थित रहते है उनको प्रकृति भी सम्मान देती है और स्वयं भगवान् भी सम्मान देते है। सोचलें आप प्रकृति जो अब संसार का संघार करने जा रही है, जिसमे होने वालें प्रकोप आज सब से बड़ी विनाशकारी शक्ति बनने जा रही है, जिसपे ना किसी के धन कि शक्ति प्रभावी रहेगी, ना कोई प्राइम मिनिस्टर उसके बारें में कर पायेगा, वैज्ञानिक भी केवल देखते रेह जायेंगे, स्वयं भी नष्ट हो जायेंगे, सब कुछ समां जाएगा। ऐसी प्रकृति जो जन्म जन्म हमारी पालना करती आयी है और जिसको हमने नष्ट किया है, वोह क्रोधित है अब हमें नष्ट करने के लिए तैयार है, वोह भी स्वमानधारी आत्माओ को सम्मान देगी यानि उनका कुछ अहित नहीं करेगी, उनके आदेश का भी पालन करेगी और कितनी बड़ी बात कही स्वयं भगवान् भी सम्मान देगा, कोई सोच सकता है? **स्वमानधारी आत्मा इतनी महान हो जाती है भगवान् के दिलतख्त नशीन बन जाती है कि स्वयं भगवान् भी उसे सम्मान देते है।** यह कितनी बड़ी प्राप्ति हो गई।

तो हम सोच सकते है इससे बड़ी प्राप्ति तो सायद ही चारो युगो में हो, तीनो लोको में और कुछ हो पाती हो, भगवान् सम्मान दें। स्वमान देकर वरदानो से वोह भरपूर कर देगा, सम्मान देगा वोह अपनी महान आत्माओ को, स्थापना के कार्य में अपना साथी बना लेगा और वर्ल्ड कि स्टेज पर लाकर खड़ा कर देगा। हमें याद रखना चाहिए **जिस स्वमान में हम स्थित होंगे लोग भी हमें उसी स्वरुप में देखेंगे,** इससे हमारी सेवाओं कि भी बहोत वृद्धि होंगी। **वास्तव में जो**

आत्मा स्वमान में स्थित है वही सहज भाव से सेवाओं को सफल कर सकती है, सेवा स्थान को निर्विघ्न बना सकती है जो भगवान् कि बहोत इच्छा है, श्रेस्ठ इच्छा है कि मेरी सेवाओं का प्रत्येक स्थान विघ्नो से मुक्त हो जाएँ स्वमान के द्वारा हम यह श्रेस्ठ कार्य करेंगे। और आगे सुनलें जो बच्चे स्वमान कि सीट पर सेट है, ज्ञान सूर्य कि किरणे उनकी छत्र छाया है। सदा सुरक्षित हो गए वोह, कितनी बड़ी चीज हो गयी।

तो हम महसूस करें बाबा हमें बहोत अच्छी अच्छी बातें केह रहे है यह हमारा परम सौभाग्य है कि स्वयं भगवान् हमारा सद्गुरु बनकर आया है, वोह हमारा परम शिक्षक बनकर आया है, वोह हमें कदम कदम पर गाइड कर रहा है, हम उसके द्वारा मिले हुए स्वमान को अपने जीवन का वरदान बनालें में तो आपको यह कहूंगा में जब बाबा को सामने बैठा देखता हूँ, भगवान् को सामने देखता हूँ और जब वोह यह महावाक्य उच्चारण करता है सभी अपनी महान आत्माओ को देख कर कि बाप अपनी सभी बच्चो स्वमानधारी और स्वराज्य अधिकारी देख रहे है। और जब वोह हम सब को देखता होगा तो जरुर वोह सोचता होगा अंदर में हालाँकि उसको कुछ सोचने कि जरुरत नहीं फिर भी वोह सोचता होगा कि यह कितने महान है पता नहीं इनको क्यूँ नहीं समज में आ रहा है।

तो बस में येही कहूंगा **जितनी ऊँची नजर से बाबा हमें देखता है हम भी अपने को उतनी ही ऊँची नजर से देखें, यह हमारा स्वमान है, भगवान् हमें सम्मान कि नजर से देख रहा है तो हम भी क्यूँ ना अपने को स्वमान कि नजर से देखें।** सचमुच हम साधारण नहीं है, अगर हम स्वमान में स्थित हो जाएँ तो हम इस कलयुग के अन्धकार में रहते भी मानो प्रकाश में रहेंगे, हम लाइट हाउस बन जायेंगे। वोह प्रकाश ना केवल हमारे लिए होगा पर वोह संसार के लिए भी बहोत सुंदर प्रकाश बन जाएगा, जो अन्धकार में भटकती हुई मनुष्य आत्माओ को सत्य कि राह दिखायेगा, मुक्ति कि राह दिखायेगा, जीवन मुक्ति के लिए मार्ग दिखायेगा।

तो आओ हम सभी भगवान् के महान बच्चे अपने श्रेस्ठ स्वमान को पहचान कर स्वयं को स्वमान में स्थित करें और परमातम श्रेस्ठ कामनाओ को पूर्ण करें।

-: ओम शांति :-

-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-

- ✓ एक योगी इस जीवन के लिए सब से ज्यादा कल्याणकारी है, उसकी इस धरा पर उपस्थिति भी जग का कल्याण करती है, आसपास के वातावरण को चार्ज कर देती है।
- ✓ जहाँ स्वमान होगा वहाँ देह अभिमान समाप्त हो जाएगा। जैसे प्रकाश अन्धकार को समाप्त कर देता है वैसे ही स्वमान देह अभिमान को समाप्त कर देता है।
- ✓ अगर हम अपने को श्रेस्ठ स्वमान में स्थित रखेंगे तो हमें सम्मान माँगना ही नहीं पड़ेगा बल्कि सम्मान सहज ही प्राप्त होगा।
- ✓ जीवन कि सभी समस्याओं का समाधान स्वमान में ही है, चाहे आपका मन भटकता है, चाहे आपका योग

नहीं लगता है, चाहे आपको प्यूरिटी कठिन लगती है, चाहे आपको क्रोध को जितना बहोत कठिन प्रतीत हो रहा है सब सहज हो जाएगा।

- ✓ हमारी श्रेस्ठ पोजीसन कि स्थिति हमारी श्रेस्ठ स्वमान के वाइब्रेशन्स दुसरो को जो उनमें यह गलत फीलिंग्स है अपोजिशन करने कि, विरदोह करने कि भावनाएं उसको निर्बल करते है।
- ✓ एक बहोत बड़ी प्राप्ति स्वमान से हमें होगी, स्वमान से हमारे बोल में प्रभाव आजाता है।
- ✓ यदि हम स्वमान में स्थित रहेंगे तो सुनने वालें हम पर सम्पूर्ण विश्वास करेंगे ही। क्यूंकि स्वमान से आत्मविश्वास में अतिशय वृद्धि हो जाती है ।
- ✓ सतयुग में जब आप देव स्वरुप में है तब आप नेचुरल देहि अभिमानी है बिना किसी अभ्यास के है और इसका तरीका है स्वमान।
- ✓ जो बच्चे स्वमान कि सीट पर सेट रहते है उनका जिम्मेदार बाप है यानि स्वयं भगवान् है और जो अपसेट रहते है उनके जिम्मेदार वोह स्वयं है।
- ✓ जो बच्चे स्वमान में स्थित रहते है उनको प्रकृति भी सम्मान देती है और स्वयं भगवान् भी सम्मान देते है। स्वमानधारी आत्मा इतनी महान हो जाती है भगवान् के दिलतख्त नशीन बन जाती है कि स्वयं भगवान् भी उसे सम्मान देते है।
- ✓ जिस स्वमान में हम स्थित होंगे लोग भी हमें उसी स्वरुप में देखेंगे ।
- ✓ वास्तव में जो आत्मा स्वमान में स्थित है वही सहज भाव से सेवाओं को सफल कर सकती है, सेवा स्थान को निर्विघ्न बना सकती है जो भगवान् कि बहोत इच्छा है, श्रेस्ठ इच्छा है कि मेरी सेवाओं का प्रत्येक स्थान विघ्नो से मुक्त हो जाएँ स्वमान के द्वारा हम यह श्रेस्ठ कार्य करेंगे।
- ✓ जितनी ऊँची नजर से बाबा हमें देखता है हम भी अपने को उतनी ही ऊँची नजर से देखें, यह हमारा स्वमान है, भगवान् हमें सम्मान कि नजर से देख रहा है तो हम भी क्यूँ ना अपने को स्वमान कि नजर से देखें।